छात्रों के शैक्षणिक विकास में अभिभावक की भूमिका

डॉ0 सविता सिन्हा

प्राचार्या, तक्षशीला कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फुलवारीशरीफ, पटना

सार

हर व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा ने हमेशा से ही एक व्यक्ति में बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण किया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं होता है, बल्कि शिक्षा के माध्यम से नई चीजों को सीखने के साथ अपने ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। हालांकि, बच्चे हमारे देश के भविष्य हैं, इसलिए हमें उन्हें अच्छी नैतिकता और बेहतर तरीके से शिक्षा ग्रहण करने पर जोर देना चाहिए, ताकि वे भविष्य में एक जिम्मेदार व्यक्ति बन सकें। शिक्षा से बच्चों समझ की क्षमता उजागर होती है कि उनके लिए क्या सही है और क्या गलत है। जब एक बच्चा एक उत्कृष्ट शिक्षा और अच्छी नैतिकता के साथ आग बढ़ेगा, तभी देश का विकास होगा। माता–पिता अपने बच्चों को प्रारंभिक विकास को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा का पहला अनुभव, बच्चा अपने घर से सीखता है। एक बच्चे के जीवन में उसका पहला विद्यालय परिवार होता है। माता–पिता बच्चे के भविष्य को एक आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि बच्चे अपने घर में अधिक समय बिता रहे हैं, तो उनके माता–पिता को उन्हें एक स्वस्थ वातावरण देना चाहिए। एक अस्वस्थ वातावरण बच्चों के विकास में रुकावट डाल सकता है। इसलिए माता–पिता को अपने बच्चों को शिक्षा का अभ्यास कराने के लिए घर को एक बेहतर स्थान बनाना चाहिए।

शब्द कुँजी : नैतिकता, दूरदर्शिता, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, बौद्धिक, दुष्प्रवृत्ति, चारित्रिक।

Received : 19/10/2025 https://doi.org/10.5281/zenodo.18258803 Acceptance : 20/11/2025

अभिभावक बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण की पहली पाठशाला है। अगर अभिभावक अपने बालक से प्रेम करते हैं और उसकी अभिव्यक्ति भी करते हैं, उसके प्रत्येक कार्य में रुचि लेते हैं, उसकी इच्छाओं का सम्मान करते हैं तो बालक में उत्तरदायित्व, सहयोग, सद्भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास होगा और वह समाज के संगठन में सहायता देने वाला एक सफल नागरिक बन सकेगा। अगर घर में ईमानदारी व सहयोग का वातावरण है तो बालक में इन गुणों का विकास भलीभाँति होगा, अन्यथा वह सभी भौतिक मूल्यों को ताक पर रखकर मनमानी करेगा और समाज के प्रति घृणा का भाव लिए समाज–विरोधी बन जायेगा। बच्चों को नैतिक विकास उसके पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन से संबंधित है। जन्म के समय उनका अपना कोई मूल्य, धर्म नहीं होता, लेकिन जिस परिवार में वह जन्म लेता है, वैसे–वैसे उसका विकास होता है।

बच्चे मानवता का दिव्यतम निधि हैं। इनके लालन–पालन में स्नेह एवं मार्गदर्शन में विवेकपूर्ण दृष्टि तथा दूरदर्शिता की आवश्यकता रहती है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में माता–पिता के त्याग, धैय, साहस, परिश्रम आदि वे सूत्र हैं जिनके द्वारा उनमें आत्मविश्वास भरा जा सकता है। बच्चों के व्यक्तित्व–निर्माण की पहली कार्यशाला उसका परिवार है। बच्चों को बाल्यकाल से ही सामान्य सुरक्षा एवं प्रोत्साहन देना अभिभावक का दायित्त्व होता है। संतोषजनक पारिवारिक जीवन व्यक्तित्व के उचित विकास के लिए आवश्यक है। घर ही ऐसा स्थान है जहाँ बच्चे को निपुणता प्राप्त होती है एवं घर तभी एक पूर्ण घर माना जाता है, जब वे बालक का लालन–पालन इतने उत्तम ढंग से करें कि बच्चों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं सामाजिक रूप से पूर्ण विकास हो।

माता–पिता बच्चों के व्यक्तित्व और चरित्र दोनों को प्रभावित करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। उनके आपसी संबंधों और व्यवहार से बालपन

सहज ही जुड़ जाता है। माता- पिता उसके लिए सुरक्षा और स्नेह का स्रोत हैं। उनके परस्पर मधुर संबंध जहाँ बच्चों के चहुँमुखी विकास में सहायक होते हैं, वहीं उनके आपसी तनावपूर्ण टूटते रिश्ते उनके विकास को न केवल अवरूद्ध कर देते हैं, वरन् उनके जीवन को अनेक कुंठाओं और विकारों से भर देते हैं। फलस्वरूप दमन, निराशा और पराजय जैसे भाव उनमें पनपने लगते हैं। अत: माता-पिता को चाहिए उनका परस्पर व्यवहार बच्चे के सामने सुलभ और सम्मानजनक हो।

बच्चों के प्रति अभिभावक का व्यवहार शिष्ट एवं मर्यादित होना चाहिए। हमें उन्हें आत्म- सम्मान एवं आत्मविश्वास प्रदान करना चाहिए ताकि भविष्य में ये सम्मानित एवं सफल जीवन जी सके। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में कुछ बातों की जानकारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसे क्या हम उनकी जिज्ञासावृत्ति का सम्मान करते हैं? उनकी बौद्धिक क्षमताओं को पहचानते है? अथवा उन पर अपनी महत्वकांक्षाएँ लाद कर उनका जीवन बोझिल बना देते हैं? उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान कर उन्हें पंगु बना देते हैं अथवा बचपन से ही उन्हें स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा देते हैं? बच्चों के विचारों एवं उनके द्वारा दिए गए सुझावों को सम्मान देते हैं? कभी- कभार उनके साथ छुट्टी मनाते हैं अथवा अपनी व्यस्तता एवं आर्थिक तंगी का रोना रोते रहते हैं? अपने- अपने पूर्वाग्रह उन पर थोपते हैं अथवा उन्हें स्वतंत्र चिन्तन के लिए प्रेरित करते हैं? जीवन के प्रति निषेधात्मक सोच को अपनाते हैं अथवा उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करते हैं?

अत: आवश्यक है कि माता-पिता बच्चों की जिज्ञासावृत्ति का सदा सम्मान करें। अक्सर ऐसा होता है, समयाभाव के कारण अभिभावक बच्चों की समस्याओं, उनके प्रश्नों को न तो पूरे मन से सुन पाते हैं और न ही उनके कौतूहल को शान्त कर उन्हें संतुष्ट कर पाते हैं। कुछ भी पूछने पर उन्हें डाँटकर उनकी निरीक्षण-क्षमता को दबा देने का अनजाने में अपराध कर जाते हैं। ऐसा करके अभिभावक बच्चों के भीतर की सृजनात्मक संभावनाओं को पल्लवित होने से पूर्व ही दमित कर देते हैं। ऐसे बच्चे अक्सर वर्जित अभिव्यक्ति तलाशने लगते हैं। माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे बच्चों की हर संभव जिज्ञासा का शमन करें। क्रोध और खीझ में भर कर नहीं, स्नेह और धैर्य के साथ उनकी हर शंका का यथासंभव निवारण करें। उन्हें समय दें। उन्हें अभय प्रदान करें, ऐसा न हो कि माता-पिता के उग्र रूप की परछाई पड़े बच्चे अपनी ही जिज्ञासाओं के भँवर-जाल में डूब जाएँ।

अत: लाख कामों में मशगूल होते हुए भी अभिभावक को चाहिए कि वे बच्चों को उचित समय और स्नेह दें। उनके साथ बैठें, उनकी परेशानियों के विषय में उनसे बात करके उनकी सहायता करें। बच्चों की कक्षा व गृहकार्य की कॉपी देखें। शिक्षक के लिखे नोट पढ़ें। बच्चों के मित्र बनकर उनके साथ खुलकर बातचीत करें। उन्हें डराएँ धमकाएँ नहीं वरन् सहायता का आश्वासन देकर उन्हें मानसिक उलझन से मुक्त करें। इतना ही नहीं किसी परीक्षा में कम अंक पाने पर उन्हें प्रताड़ित न करें। कारण की तह तक जाए, न कि पीटकर, अपशब्द बोलकर या डाँटकर उन्हें शारीरिक व मानसिक दु:ख पहुँचाएँ। उनका मनोबल बढ़ते हुए उन्हें उत्साहवर्धक शब्द दें। उन्हें कहें कि वे प्रतिभावशाली है। पुरुषार्थी हैं। एक उन्नत भविष्य उन्हें पुकार रहा है। उन्हें उनकी प्रतिभा से परिचित कराएँ।

बच्चों की मानसिक, बौद्धिक एवं रचनात्मक क्षमताओं को पहचानें, अक्सर माता-पिता अपने बच्चों की रुचियों एवं क्षमताओं से अनभिज्ञ रहकर उन पर अपनी इच्छाओं, महत्त्वाकाक्षाओं और सपनों को थोप देने की भारी भूल कर बैठते हैं। स्वयं अगर डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, आई.ए.एस. अफसर नहीं बन पाए तो अपनी अतृप्त लालसा को उनमें तलाशना शुरू कर देते हैं। अपनी चाहत उन पर लाद कर उनकी बुद्धि को कुंठित करने की भूल कदापि नहीं करना चाहिए। उनके अपने सपने हैं जिन्हें वे पूरा करना चाहेंगे। प्रकृति ने हर व्यक्ति को एक-एक विशेष योग्यता देकर भेजा है।

हम एक चित्रकार के हाथ में रंग और तूलिका थमाने के स्थान पर उसे ईट-पत्थर गारे-चूने में धकेल कर सिविल-इंजीनियर बनाने की गलती न करें। बचपन में ही उसकी रुचि, ऊर्जा को पहचानें। जबरदस्ती से चुने गए विषय और कैरियर उसे पूरा जीवन संतोष नहीं दे पाते और वह व्यक्ति उसे ढोता हुआ अपना जीवन बोझिल बना लेता है। उनकी क्षमता के अनुरूप उन्हें सही दिशा देना अभिभावक का कर्तव्य है, अन्यथा बच्चों के

ही नहीं, समाज के ही अपराधी माने जायेंगे और देश भी ऐसी प्रतिभाओं के विकास के लाभ से वंचित रह जाएगा।

बच्चों में सहज प्रवृत्ति होती है कि उसे प्यार करें और सम्मान दें। प्यार वाली बात तो ठीक पर सम्मान की बात कुछ समझ में नहीं आती है परन्तु ऐसी बात नहीं है, सम्मान की भूख जन्म से ही पाई जाती है। यदि वह उसे उचित मात्रा में और उचित समय पर नहीं मिल पाती है, तो बच्चे के हृदय में हीन ग्रन्थी बनना प्रारम्भ हो जाती है। प्यार और सम्मान के अभाव में बालक इन्हें पाने के लिए ऐसे प्रयत्न करता है, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर बरबस ही आकर्षित हो जाता है। हाँ कोई उपयोगी क्रिया करके आकर्षित करने की स्थिति में तो वह नहीं रहता है, पर वस्तुओं को तोड़-फोड़कर, फेंक- फाँककर और खराब करके सभी को अपनी ओर खींच लेता है। ऐसे क्षणों में वस्तुओं की रक्षा के लिए सभी को उसकी ओर ध्यान देना ही पड़ता है। अस्तु प्यार एवं सम्मान यदि मिलता रहता, तो वह इस प्रकार की दुर्घटना की शरण लेकर अपनी अपेक्षा न करवाता।

बच्चों और बड़ों के बीच बहुत अधिक स्तर का अन्तर होगा, तो उनके बीच खाई बनती चली जायेगी। इसका परिणाम होगा बच्चा लुक-छिपकर अपनी गतिविधि को सम्पन्न करेगा। इस प्रकार के भेदभाव की वृत्ति अभिभावक और बालक के बीच पनपती रहेगी। इसे बढ़ावा न देते हुए बच्चों के सामने अभिभावकों को हर छोटे बड़े कार्य करते रहना चाहिए, जिनका अनुकरण बच्चे घरों में करते रहें। इससे बच्चे यह भी समझने लगेंगे कि अभिभावक का व्यवहार उनकी समझ के स्तर के अनुसार हो रहा है। बालकों की बहुत सी समस्याएँ तो हल होंगी ही साथ ही बच्चों में अच्छी आदतों का निर्माण भी होगा।

हर अभिभावक यह चाहता है कि उनके बच्चे सभ्य, शिष्ट एवं सुसंस्कारवान बनें। किन्तु बच्चों में इन्हें लाने का प्रयत्न इतना कम होता है, जिससे बच्चे ऐसे नहीं बन पाते हैं। अभिभावकों का अति लाड़ प्यार बच्चों को जैसा वे चाहते हैं, वैसा बनने में रुकावट पैदा करता है। बच्चों की हर बात में लाड़ प्यार के कारण उन्हें बढ़ावा देते रहने से एक दिन वे ही बच्चे उद्दण्ड होते देख गये हैं जब लाड़ प्यार का परिणाम यहाँ तक पहुँचहता है तब अभिभावक की आँखें खुलती हैं। यदि वे इसके पूर्व ही छान बीन करते हुए अपने बालक को उचित-अनुचित का ज्ञान करवाते रहते तो बच्चे सीमा तक नहीं पहुँच पाते।

प्रतिस्पर्धाओं के आयोजन भी बच्चों को अपराधी बनाने में सहायता करते हैं। कितने ही बच्चे शक्तिहीन होने के कारण प्रतिस्पर्धा में स्थान प्राप्त नहीं कर सकते है, या परीक्षा में अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण नहीं हो सकते है। ऐसे छात्र वस्तु की तोड़-फोड़ करके या नकल पट्टी करके प्रतियोगिता में आगे निकलने का प्रयत्न करते है। यही परिस्थिति आगे जाकर दुष्प्रवृत्ति का रूप धारण कर लेती है। ऐसे बालकों के लिए साधन, सुझाव, साहस, उत्साह आदि देते रहना चाहिए। ताकि थोड़ी बहुत भी सफलता उन्हें अपने जीवन में दिखाई देगी तो फिर वे इस दुष्प्रवृत्ति की शरण न लेंगे।

बच्चों पर संगति का प्रभाव शीघ्र पड़ता है। बच्चा अनुकरण प्रिय होता है। उसके सामने जो भी गतिविधि आती है उसका अनुकरण करने की चेष्टा करता है। अस्तु बच्चों को कुसंग से दूर रखने के लिए हर संभव प्रयत्न किया जाना चाहिए। यही नहीं, उन्हें अच्छी संगति मिले, ऐसा वातावरण भी उपस्थित किया जाना चाहिए। बच्चों को भले बुरे का बोध धीरे-धीरे होता रहता है। इस प्रगतिशील समय में यदि माता-पिता सावधानी पूर्वक हर क्षण हर बात पर बच्चे को इसका बोध कराते रहें तो बच्चा अच्छी बातों की ओर प्रवृत्त होने लगेगा, लेकिन यह तभी सम्भव होगा जबकि माता-पिता बुरे काम की बुराई करके उसके बुरे परिणाम तथा अच्छे काम की प्रशंसा कर उसके लाभ समझाते रहें। ऐसा करते रहने से बच्चे में भले-बुरे का बोध होने लगेगा, जो बाद में जाकर विवेक जागृत करने में अधिक सहायक रहेगा।

कुछ अभिभावक भी अपनी ओर से कर्त्तव्य निभाने का प्रयत्न करें तो बालकों की बहुत सारी समस्याएँ पैदा ही नहीं होगी। हर अभिभावक अपने बच्चों के साथ कुछ समय निश्चित ही व्यतीत करें, जिसमें मानसिक स्तर की सामान्य चर्चा करें, खेल-खेल से वातावरण में सारे निर्देश देते रहें तथा बच्चों की जिज्ञासा यथा सम्भव शान्त करते रहें। इसमें उनमें सही और गलत

का निर्णय करने की सामर्थ्य पैदा होगी और अच्छाई की ओर बढ़ने का उत्साह बढ़ेगा। यही नहीं, बल्कि अभिभावक बालकों का बहुत सी बारीक समस्याओं को निकट से देख सकेंगे, जिन्हें वे सहज ही बिना कहे समाहित कर लिया करेंगे।

आज का युग आर्थिक संकट का है। हर परिवार की आर्थिक क्षमता सीमित है। अस्तु इस बिन्दु को ध्यान में रखते हुए बच्चों में इतनी इच्छाएँ जन्म न ले पाये जो सीमा के बाहर हों। पर उसमें यह भी ध्यान रखना है कि बच्चों की महत्वाकांक्षा दब नहीं जाए। हाँ, उनकी महत्वाकांक्षाओं को ऐसा स्वरूप देते रहना चाहिए जो आर्थिक सीमाओं में पूरी की जा सकें। अधिकांश बच्चे अपने बाल्यकाल में इसलिए निष्क्रिय हो जाया करते हैं कि उन्हें अपनी रुचि का काम, विषय, वातावरण आदि नहीं मिल पाता है। माता-पिता बच्चे को निष्क्रिय समझ करके उसे निरुत्साहित और निराश किया करते हैं। किन्तु उसकी निष्क्रियता का कारण मालूम करने की चेष्टा नहीं करते हैं। उत्साह और उमंग वही होता हैं, जहाँ रुचि का काम मिल पाया हो। अस्तु अभिभावक बालकों की रुचि का पता लगाकर उसके अनुकूल ही उन्हें दिशा देने का काम करें। ऐसा करने से बालकों में उमंग और उत्साह का वर्धन होगा और वे सक्रिय बनने लगेंगे।

आजकल के बच्चे स्वच्छता और सादगी के प्रति उदासीन रहते हैं। कुछ तो अभिभावक ही स्वच्छता और सादगी से कोसों दूर रहते हैं फिर बच्चों को क्या कहा जाए। पर माता-पिता को बालक को स्वच्छता, घर सम्बन्धी स्वच्छता एवं सामाजिक स्वच्छता का व्यावहारिक ज्ञान देना चाहिए। इसके लिए अभिभावक स्वयं भी अनुशासित रहें। इससे बच्चे अपने आप अनुकरण करेंगे एवं व्यावहारिक क्रियाओं के द्वारा उनमें स्वच्छता के प्रति रुझान होने लगेगा।

बच्चा भी माता-पिता, स्कूल वातावरण, सामाजिक वातावरण देखकर अपनी खर्चीली माँग प्रस्तुत करता रहता है। किन्तु यदि माता-पिता सादा-जीवन जीने की ओर चेष्टा करें तो बालकों को भी उसके लिए समझ दी जानी सम्भव है। सादा जीवन जीने में वैज्ञानिक लाभ दर्शाते हुए, वैभवपूर्ण जीवन जीने में हानियों का प्रतिपादन किया जाए तो बालाकों में सदा-जीवन जीने की आदत आ सकती है।

निष्कर्ष:

बच्चों के विकास व उत्थान के लिए अभिभावक को प्रेम और आधारभूत व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता है, जिससे उनके नन्हे भविष्य को अपना व्यक्तित्व निखारने में मदद मिलती है। अभिभावकता के लिए उचित समय प्रयोग और निरंतर प्रयास नितांत आवश्यक है। माता-पिता के सुखद व सामंजस्यपूर्ण व्यवहार और आचार-विचार से बच्चों में अनोखे व्यक्तित्व का विकास होता है, जिसकी खुशबू हर पल आनंद प्रदान करती है। यह अतिशयोक्ति नहीं है कि माता-पिता एक सुदृढ़ परिवार का निर्माण कर सकते हैं, जो उन्हें बच्चों के प्रखर व्यक्तित्व बनाने से ही प्राप्त होता है। इसके लिए बच्चों के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, वैचारिक और सामाजिक-सभी पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे धर्मशास्त्रों में माता-पिता तथा शिक्षक तीनों को बालक के जीवन निर्माण में महत्त्वपूर्ण माना है। माँ-बाप उसका पालन-पोषण, संवर्द्धन करते हैं तो शिक्षक उसके बौद्धिक, आत्मिक चारित्रिक गुणों का विकास करता है, उसे जीवन और संसार की शिक्षा देता है। उसकी चेतना को जागरूक बनाता है। शिक्षक के शिक्षण, उसके जीवन व्यवहार, चरित्र से ही बालक जीवन जीने का ढंग सीखता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. जोशी, ए .सी (1967) पैरेन्ट टीचर कोऑपरेशन : इट्स रोल इन इम्प्रूवेसेंट ऑफ एजुकेशन, राजकीय परास्नातक वेसिक प्रशिक्षण महाविद्यालय, चंडीगढ़।
2. कुलकर्णी, एस (1988) पेरेन्ट एजुकेशनः प्रस्पैक्टिव्स एंड एप्रोचेस, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
3. वही।
4. यादव, एम.एस. एवं रॉय एस. (1979) लिकिंग टीचर एजुकेशन विद् कम्यूनिटी डेवलपमेंट, जनरल ऑफ इन्डियन एजुकेशन, नई दिल्ली, वोल्यूम-III, खण्ड-2 ।